

पहले प्रथम विश्व युद्ध के बाद इंग्लैंड का गर्मनी के साथ संबंध और नैतिक दृष्टि से गर्मनी को विश्व युद्ध का दोषी ठहराया गया था परन्तु इंग्लैंड के इतिहास में निरंतर परिवर्तन होता रहा था इंग्लैंड पर गहरी नीति थी कि प्रबल शक्ति का शक्तिशाली देश हो जाना, साथ-साथ उसे साम्राज्य की ओर भी गया था अब इंग्लैंड का गर्मनी के प्रति व्यवहार कुछ होता माना था प्रथम विश्व युद्ध से ही गर्मनी इंग्लैंड के साथ का प्रमुख शत्रु था अब इंग्लैंड गर्मनी की आर्थिक स्थिति को सुधारा कि उसके साथ युद्ध-लाभार्थी संबंध स्थापित करने चाहता था लांड गर्मनी का विचार था कि युद्ध, संयुक्त देशों से युद्ध गर्मनी समझ के लिए आवश्यक है और वस्तु की संघर्ष की ओर भी इंग्लैंड गर्मनी पर कठोर आर्थिक लगाव गहरी चाहता था इंग्लैंड गर्मनी के आर्थिक अस्थिरता के पक्ष में भी था इंग्लैंड सहस्रों के सैनिकों में परिवर्तन करके उसे गर्मनी के लिए अधिक कठोर योजना बनाई थी और इंग्लैंड गर्मनी के इंग्लैंड की व्यवस्था को भी काम करके फिलीपपा की कठोरता के बिना युद्ध के पक्ष में था

1922 ई में गर्मनी ने अपनी आर्थिक स्थिति को औपनीत बनाते हुए आर्थिक मदद ले इस्का कर दिया फ्रांस ने गर्मनी पर आर्थिक दबाव डालने की शक्ति न करने का प्रस्ताव किया अब 1924 ई में फ्रांस ने गर्मनी के इन प्रस्तावों पर आधिकार कर लिया इंग्लैंड ने फ्रांस के इस कार्य लिए विरोध किया 1925 ई में लोकार्णो समझौते के द्वारा इंग्लैंड ने गर्मनी की परीक्षा और को लोकार्णो कर लिया, किन्तु पूर्ण सीमा के लिए कोई आश्वासन नहीं दिया फ्रांस गर्मनी की पूर्ण सीमा के विषय में भी इंग्लैंड से अशुभ भावना था किन्तु गर्मनी के प्रधानमंत्री विल्सन की अंतर-राष्ट्र के कारण गर्मनी और मित्र राष्ट्रों के संबंधों में पहले के समान कठोरता नहीं रही 1933 ई में हिटलर के उदय के बाद इंग्लैंड ने गर्मनी के प्रति नीति को भी नई दिशा दी इंग्लैंड द्वारा इस प्रकार की नीति अपनाते कि कुछ विशेष कारणों से इंग्लैंड साम्राज्य की ओर भी गया था इंग्लैंड द्वारा इस प्रकार की नीति अपनाने के कारण तात्कालीन गर्मनी, इटली, और जापान को प्रोत्साहित कर रहा के प्रभाव और विरोध को रोकना चाहता था इसके अतिरिक्त इंग्लैंड, फ्रांस, गर्मनी और जापान को आपस में लड़ना निर्वहण लागू चाहता था ताकि शक्ति की शक्ति का संतुलन बना रहे उस समय इंग्लैंड की आर्थिक स्थिति भी संतोषजनक नहीं थी किन्तु इंग्लैंड युद्ध से बचना चाहता था इंग्लैंड की इस नीति को भी कई कारणों के कारण उसने गर्मनी के अनेक आपत्तिकारणों का विरोध किया गर्मनी का हिटलर द्वारा आधिकारिक कर, वस्तु की संबंधित प्रस्ताव फ्रांस लोकार्णो समझौते को नोकर 1935 ई में खारिज कर दिया

